ISSN 2455-5169

परिवर्तन : साहित्य, संस्कृति एवं सिनेमा की वैचारिकी

रमेश कुमार सोनी की कविताएँ

जे पी रोड - बसना, छत्तीसगढ़ 493554
rksoni1111@gmail.com

भूख का घर

रोजी – रोटी की तलाश में
बंजारे सा भटकते हुए, मकान बदलते रहे
गाँव से शहर, मोहल्ले दर मोहल्ले
घूम रहा है आदमी
काँधे पर घर लिए पृथ्वी के साथ
हवाओं की ओर पीठ किए , भोर को निहारते ।
मकान के साथ बदलते रहे पहचान
चेहरों पर चस्पा हो गए हैं मकान नम्बर ...
हर बार नए रिश्ते , नई पहचान , नए पड़ोसी
हर बार मिलने की खुशी , बिछुड़ने का दर्द
फिर भी पहचानों की भीड़ में अकेला है आदमी ; घूम रहा है आदमी
घर बनाने का सामान साथ लिए
मकान की तलाश में चार दिन के लिए ।
जरूरतों की पोटली से सूची झाँकती है –
दाल , रोटी, नून , मिर्ची , आलू , प्याज ....
सफर में उसने भूख को उधारी पर दे रखा है
क्रोध और आँसू को थूक देता है
नाली में एक गंदी गाली के साथ ;
इस सफर में उसने खो दिया है
दादा – दादी , माँ – बाप और
पा लिया है ब्याह का सुख, पिता की खुशी
भूख भी घर बदलता है, मकानों के साथ ।।

आदमी घूम रहा है पृथ्वी के संग

आदमी घूम रहा है पृथ्वी के संग
आदमी चकरघिन्नी हो गया है
अपने घर - परिवार , गाँव - शहर में
भूख बुझाने खट रहा है
कोई थका है कोई बुझा है ;
भोर से साँझ कोई ताक रहा है
कोई लूट रहा कोई लूटा रहा है ।
आदमी कई बार खुद लाचार हो जाता है
इस ब्यवस्था का बोझ उठाए और
बन जाता है एक जिंदा लाश
इससे कोई बदबू - सड़न नहीं होती
वह विचारशून्य हो जाता है
दुःख - सुख , मौसम से परे
वह तलाशता रहता है जीवन भर
चार काँधे , इसी को पाल - पोष
कर बड़ा बनाता है फिर भी
उसके आँसू , भूख , दर्द उसी के हिस्से आते हैं ।
यह आदमी अपनी लाश खुद उठाए फिरता है
चार काँधे कहाँ सबको इस जहाँ में मिलता है
दो गज ज़मीन कहाँ सुरक्षित है आपका
कहाँ कोई काँधा आता है
आपके पास जीवन भर
वृद्धों की जिंदगी को इस दुनिया ने
कब की खारिज कर रखी है

हाशिए की सूली में टंगा है
मेरे शहर का वृद्धाश्रम...

गढ़ते हैं जिंदगी की पहचान
पढ़ने -सीखने से आदमी समझता है
और कोई समझदार आदमी कभी
अपनी पहचान , और अस्मिता खोने नहीं देता ।।

----- ------

कैसे पहचानते हैं आप कोई गाँव - शहर ?

शहर को कैसे पहचानते हैं आप
शहर की कोई सूरत
जो आपके मन में बसी है
पाँच -दस वर्ष बाद बदल जाती है
लोग तो यहाँ के पल भर में बदल जाते हैं
सड़कें इसकी सुंदरता दिखाती हैं
रेलगाड़ी इसकी बदसूरती की बदबू
वायुयान कहे दूर के ढोल सुहाने
जलमार्ग डराती रही पूरे रास्ते भर
शहर को पहचानने के लिए
हम जानते हैं उसे अपने रिश्तों से ,
पुरातात्विक धरोहरों से , नदी , स्मारकों से ,
घटनाओं से और उसकी सभ्यता -संस्कृति से
मैं आबादी को वहाँ के रचनाकारों से ,
वहाँ के शिक्षकों से जानना चाहता हूँ
जिसने वहाँ आबाद बस्ती अब तक रहने दी ।
कोई नहीं चाहता कि उसकी बस्तियाँ
चोर -आवारों , अपराधों ,
कूड़े -कचरे और
समस्याओं के लिए पहचाना जाए ;
गाँव और शहर को उसकी
पहचानने लायक बनाने के लिए
हम सबको पढ़ना - सीखना चाहिए
पढ़ना सिर्फ अक्षरों और अंकों का नहीं होता
पसीने और खेती-बाड़ी भी